मीडिया का सामाजिक सरोकार

♦ राजु कुमार

पिछले 15 वर्षों में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेज बदलाव देखने को मिला है। सूचना क्रांति एवं तकनीकी विस्तार के चलते मीडिया की पहुंच व्यापक हुई है। इसके समानांतर भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण की प्रक्रिया भी तेज हुई है, जिससे मीडिया अछूता नहीं है। नए-नए चैनल खुल रहे हैं, नए-नए अखबार एवं पत्रिकाएं निकाली जा रही है और उनके स्थानीय एवं भाषायी संस्करणों में भी विस्तार हो रहा है। मीडिया के इस विस्तार के साथ चिंतनीय पहलू यह जुड़ा गया है कि यह सामाजिक सरोकारों से दूर होता जा रहा है। मीडिया के इस बदले रूख से उन पत्रकारों की चिंता बढ़ती जा रही है, जो यह मानते हैं कि मीडिया के मूल में सामाजिक सरोकार होना चाहिए।

भारत में मीडिया की भूमिका विकास एवं सामाजिक मुद्दों से अलग हटकर हो ही नहीं सकती पर यहां मीडिया इसके विपरीत भूमिका में आ चुका है। मीडिया की प्राथमिकताओं में अब शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, विस्थापन जैसे मुद्दे रह ही नहीं गए हैं। उत्पादक, उत्पाद और उपभोक्ता के इस दौर में खबरों को भी उत्पाद बना दिया गया है, यानी जो बिक सकेगा, वही खबर है। दुर्भाग्य की बात यह है कि बिकाऊ खबरें भी इतनी सड़ी हुई है कि उसका वास्तविक खरीददार कोई है भी या नहीं, पता करने की कोशिश नहीं की जा रही है। बिना किसी विकल्प के उन तथाकथित बिकाऊ खबरों को खरीदने (देखने, सुनने, पढ़ने) के लिए लक्ष्य समूह को मजबूर किया जा रहा ह। खबरों के उत्पादकों के पास इस बात का भी तर्क है कि यदि उनकी ''बिकाऊ'' खबरों में दम नहीं होता, तो चैनलों की टी.आर.पी. एवं अखबारों का रीडरशिप कैसे बढ़ता ?

इस बात में कोई दम नहीं है कि मीडिया का यह बदला हुआ स्वरूप ही लोगों को स्वीकार है, क्योंकि विकल्पों को खत्म करके पाठकों, दर्शकों एवं श्रोताओं को ऐसी खबरों को पढ़ने, देखने एवं सुनने के लिए बाध्य किया जा रहा है। उन्हें सामाजिक मुद्दों से दूर किया जा रहा है।

ऐसी ही परिस्थितियों के बीच मीडिया में विकास के मुद्दों को बढ़ावा देने का कार्य कर रही भोपाल की एक संस्था विकास संवाद ने कुछ दिन पूर्व चित्रकूट में राष्ट्रीय मीडिया संवाद का आयोजन कर नई उम्मीदें जगाई हैं। संभवतः देश में यह पहला आयोजन है, जिसमें 7 राज्यों - मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब के पत्रकारों ने भाग लिया। संवाद में संपादक, वरिष्ठ पत्रकार, स्वतंत्र पत्रकार, वरिष्ठ उप संपादक, उप संपादक, संवाददाता, जिला संवाददाता, पत्रकारिता के प्राध्यापक एवं पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने शिरकत की।

संवाद का स्वरूप अनौपचारिक था, जिसमें प्रतिभागियों को अपने अनुभवों एवं अतीत को खंगालने का मौका मिला। संवाद की शुरुआत पत्रकारों ने अपने सफर के साथ ही शुरू कर दी थी। आयोजन में विभिन्न संस्थानों के पत्रकार काम के दबाव के बाहर आकर एक दूसरे से मिले। कई पत्रकार पिछले 4-5 वर्षो से फोन पर चर्चा करते रहे थे, पर आपस में कभी मिले ही नहीं थे, कई पत्रकार वर्षों बाद आमने-सामने हुए. सभी ने अपनी यादों के गर्द को साफ करना शुरू कर दिया - किस मकसद के लिए है पत्रकारिता, किस ओर जा रही है पत्रकारिता, किन-किन दबावों को झेल रही है पत्रकारिता, कौन कहां क्या कर रहा है, के साथ-साथ हास-परिहास।

राष्ट्रीय मीडिया संवाद को कई सत्रों में विभाजित किया गया था, पर ऐसा नहीं था कि उसमें तब्दीली न की जा सके। पूरी स्वतंत्रता थी कि सामूहिक रूप से तय कर चर्चा को आगे बढ़ाया जाये और ऐसा हुआ भी. रात को सभी पत्रकारों ने अपने जीवन के दूसरे पक्ष को टटोला, जिस फन को भूल गए थे उसे याद किया, पद और शक्ति का चोला एक ओर रखकर आयोजन स्थल को कम्यून बना दिया, सभी बराबर और सभी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

राष्ट्रीय मीडिया संवाद में कुई गंभीर चर्चाएं हुई - क्या है विकास, एकांगी विकास, समग्र विकास, शहरी एवं ग्रामीण विकास में अंतर, विस्थापन, स्वास्थ्य, बच्चों के अधिकार, विकास में महिलाओं की स्थिति, समानता एवं उसके विभिन्न पहलू, वैकल्पिक मीडिया, मुख्यधारा के मीडिया में स्पेस की समस्या का समाधान, अपनी भूमिकाएं आदि कई मुद्दों पर चर्चा की गई।

संवाद की शुरुआत परिचय के साथ हुई। परिचय में प्रतिभागियों ने न केवल अपने नाम, संस्थान एवं अपने काम के बारे में बताया, बल्कि गैर सरकारी संस्थाओं को वे किस नजर से देखते हैं और संस्थाओं एवं समाज के बीच उनकी अपनी क्या छवि है को लेकर भी बात की। माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष पुष्पेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि स्वयंसेवी संस्थाएं भावनात्मक आधार पर काम करते हैं पर मीडिया तर्क और विवेक को मानता है। इसी सत्र में दैनिक जागरण, मेरठ में कार्यरत रमेन्द्र नाथ झा ने

अपने अनुभवों को बताया कि जब उनके पास विकास की खबरें आती है, तब उनकी कोशिश होती है कि उसे किसी भी तरह से प्रकाशित होना चाहिए, यदि उस दरम्यान विज्ञापन या अन्य खबरों का दबाव हो तो भी कोशिश होती है कि वह एक कॉलम या बॉक्स के रूप में ही चला जाए। अन्य प्रतिभागियों ने भी बताया कि सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तो रहती है, पर इन मुद्दों पर कार्यरत सभी स्वयंसेवी संस्थाओं को वे सही नहीं मानते। उन्होंने यह भी कहा कि जो संस्थाएं एवं संगठन बेहतर काम करती है, उनकी बातों को सुनते भी हैं और उनके द्वारा उठाये गए मुद्दों को प्रकाशित करने का प्रयास भी करते हैं।

विकास एवं सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों को संचार माध्यमों में विस्तार देने के उद्देश्य से वेब एवं न्यूज पोर्ठल के विकल्पों पर भी चर्चा की गई पर यह बात भी सामने आई कि अभी भी इसमें विश्वसनीयता का संकट है। इसकी तकनीकी पहलुओं और पहुंच के बारे में पी.एन.एन. हिन्दी न्यूज पोर्टल के संपादक शिराज केसर एवं माय न्यूज डॉट इन न्यूज पोर्ठल के संपादक वेदव्रत गिरि ने विस्तार से बात की। इसी चर्चा में ब्लॉग को लेकर भी बात हुई कि क्या जो खबरें प्रकाशित नहीं हो रही है, उसे ब्लॉग पर डाल देना चाहिए या फिर ब्लॉग एक ऑनलाइन व्यक्तिगत डायरी ही माना जाना चाहिए। विस्तृत होती जा रही इस चर्चा को विराम देते हुए यह माना गया कि वेब को विकल्प के बजाय विस्तार के रूप में देखा जाना चाहिए, क्योंकि इसे भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक संदर्भ में देखे जाने की जरूरत है। वेब के लिए भाषा आज भी एक समस्या है।

जन संगठनों की अवधारणा एवं मीडिया के बारे में सप्रेस (इंदौर) के कार्यकारी संपादक चिन्मय मिश्र ने कहा कि जन संगठनों की जरूरत और कार्यशैली स्वयंसेवी संस्थाओं से अलग है जबकि मीडिया में सामान्य तौर पर इसे एक ही रूप में देखा जाता है। मीडिया इन दोनों के फर्क को समझ कर ही विकास के मुद्दे पर चल रहे आंदोलनों एवं कार्यों को वास्ततिक रूप से समझ सकता है। विकास : शहरी बनाम ग्रामीण के तहत स्वास्थ्य, विस्थापन, कृषि आदि मुद्दों को समझने का प्रयास किया गया। इसमें विकास की वर्तमान प्रक्रिया पर भी चर्चा की गई और यह माना गया कि मुद्दों को समझने के लिए विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित करने की जरूरत है। जोहार सहिया (रांची) के संपादक अश्विनी 'पंकज' ने कहा कि विकास की प्रक्रिया में जिस तरह से स्थानीय भाषा को उपेक्षित किया जा रहा है, वह हाशिये पर पड़े समुदाय को विकास की प्रक्रिया से बाहर करने का ही एक तरीका है। यदि हमें भी विकास की बात करनी है, तो स्थानीय भाषाओं को महत्व देना ही होगा। प्रभात खबर (रांची) के वरिष्ठ संवाददाता निराला तिवारी ने सवाल उठाया कि मुख्यधारा की जब हम बात करते हैं, तो आदिवासियों या ग्रामीणों की परिभाषा में हम क्यों नहीं शामिल होते हैं? सभी ने माना कि हम इन सवालों पर विश्लेषणात्मक एवं विचारात्मक रवैया अपनाना होगा।

अति व्यस्त माने जाने वाले पत्रकारों ने इन चर्चाओं के लिए दो दिन को नाकाफी माना और लगातार ऐसे संवाद के आयोजित करने एवं इसको विस्तार देने पर बल दिया। संवाद में दैनिक जागरण (इलाहाबाद) के संपादक हरिशंकर मिश्र, प्रभात खबर (रांची) के वरिष्ठ संवाददाता निराला तिवारी, जोहार सहिया (रांची) के संपादक अश्विनी 'पंकज', दैनिक जागरण (मुजफ्फरपुर) के वरिष्ठ संवाददाता एम. अखलाक, अमर उजाला (मेरठ) के उप संपादक रमेन्द्रनाथ झा, पी.एन.एन. हिन्दी न्यूज पोर्टल के संपादक शिराज केसर, दैनिक भास्कर (लुधियाना) के उप संपादक सचिन श्रीवास्तव, राजस्थान पत्रिका (जयपुर) के उप संपादक प्रसुन्न मिश्र, सप्रेस (इंदौर) के कार्यकारी संपादक चिन्मय मिश्र, न्युज टुडे (इंदौर) की मुख्य उप संपादक ऋतु मिश्र, राज एक्सप्रेस (इंदौर) के वरिष्ठ उप संपादक अभय नेमा, नवभारत (सतना) के संपादक संजय पयासी, नवभारत (भोपाल) के समन्वय संपादक राकेश चौधरी, नवभारत (इंदौर) के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. संतोष पाटिदार, दैनिक जागरण (भोपाल) के समाचार संपादक सुनील गुप्ता, दैनिक भास्कर (भोपाल) के समाचार संपादक सूर्यकान्त पाठक, माय न्यूज डॉट इन न्यूज पोर्ठल के संपादक वेदव्रत गिरि, हिन्दुस्तान टाईम्स (ग्वालियर) के संवाददाता भुवनेश तोमर, माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष पुष्पेन्द्रपाल सिंह, विकास संवाद के सचिन जैन सहित कई पत्रकार शामिल हुए।

राष्ट्रीय मीडिया संवाद में एक बात बहुत ही स्पष्ट रूप से उभरकर आई कि बाजार एवं व्यावसायिक दबावों के बीच सामाजिक सरोकार से जुड़ी पत्रकारिता हो सकती है और नई चुनौतियों पर चर्चा एवं नई राह तलाशने के लिए ऐसे आयोजन लगातार किए जाने की जरूरत है।

आगामी कार्ययोजना को तय करते हुए यह माना गया कि –

- विकास के मुद्दों को अखबारों के लिहाज बिकाऊ बनाने की जरूरत है।
- मुद्दों के विभिन्न पक्षों को देखने की जरूरत है।
- सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने की जरूरत है।
- मुद्दा आधारित पत्रकारों के समूह बनाने की जरूरत है।
- स्थानीय मुद्दों पर लिखने, शोध करने एवं उसका फॉलोअप करने की जरूरत है।
- मीडिया के छात्रों के साथ कार्यशाला आयोजित करने की जरूरत हैं।

- प्रभावित क्षेत्रों में कार्यशाला करने की जरूरत है।
- सामाजिक विकास से जुड़ी एजेंसियों के माध्यम से मुद्दों पर लिखे गए लेखों को जारी करने होंगे।

इन कार्ययोजनाओं को देखते हुए यह जरूरी है कि जो प्रतिभागी संवाद में शामिल हुए हैं और जो मीडिया संवाद से जुड़े हैं, या फिर जो जन सरोकार से जुड़कर मूल्यपरक पत्रकारिता के पक्षधर हैं, वे अपने-अपने क्षेत्र में संवाद की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएं। इसके लिए निम्न कार्य करना महत्वपूर्ण हैं –

- विकास से जुड़े मुद्दे पर अपने आसपास (प्रदेश, जिला या क्षेत्र) की घटनाओं की जानकारी मीडिया संवाद से जुड़े साथियों को अवगत कराना, ताकि उस पर अलग-अलग आयामों के साथ लेखन एवं कार्य किया जा सके।
- संवाद से जुड़े साथियों के साथ लगातार संवाद बनाए रखने की कोशिश करना और उनके साथ अपने अनुभवों को साझा करना।
- अपनी जानकारियों को दूसरे साथियों के साथ साझा करना।
- विभिन्न मुद्दों पर द्वितीयक सामग्री के लिए अन्य साथियों से चर्चा करना।
- स्थानीय मीडिया संवाद का आयोजन करना।
- विभिन्न मुद्दों पर स्थानीय मीडिया संवाद के आयोजन के लिए पहल करना।
- प्रमुख एवं सामयिक मुद्दों के कव्हरेज के लिए योजना बनाना और उसे क्रियांवयित करना।
- विकास के मुद्दों पर स्वयं के प्रकाशित लेखों एवं समाचारों को अन्य साथियों के पास भेजना और उसकी कॉपी विकास संवाद को भी भेजना ताकि उसे वेबसाइट पर डाउनलोड किया जा सके, जिससे कि उसका उपयोग अधिकतम लोग कर सके।
- सामाजिक विकास से जुड़े मुद्दों पर लेख एवं समाचार जारी करने वाली एजेंसियों को समाचार एवं लेख भेजना।
- मीडिया संवाद का आगामी स्वरूप कैसा हो, को लेकर चर्चा करना और उससे विकास संवाद को अवगत कराना।

उल्लेखनीय है कि विकास संवाद ने पिछले वर्ष पचमढ़ी में एक राज्य स्तरीय मीडिया संवाद की शुरुआत छोटे समूह के साथ की थी। उसके बाद मध्यप्रदेश के विभिन्न प्रमुख शहरों के उन पत्रकारों को एक मंच पर लाने की कोशिश की गई जो सामाजिक सरोकार एवं विकास पत्रकारिता के प्रति गंभीर हैं। कई क्षेत्रीय मीडिया संवाद के आयोजन भी किए गए। महज एक वर्ष में सैकड़ों पत्रकार मीडिया संवाद से जुड़ चुके हैं और विकास के विभिन्न मुद्दों पर विश्लेषणात्मक और तथ्यपरक समाचारों एवं लेखों का प्रकाशन एवं प्रसारण कर रहे हैं। विकास संवाद द्वारा विभिन्न मुद्दों पर जारी सरकारी एवं गैर सरकारी रिपोर्ट्स, सर्वे, आंकड़ों आदि का विश्लेषण कर समय-समय पर पत्रकारों को उपलब्ध कराया जाता है।

संपर्क : विकास संवाद
ई.7/226, प्रथम तल, धनवन्तरी काम्पलेक्स के सामने
अरेरा कॉलोनी, शाहपुरा, भोपाल, म.प्र.
फोन - 0755- 4252789
vikassamvad@gmail.com